REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 1 | OCTOBER – 2017

कूर्म पुराण में ब्रह्मा का स्वरूप

निर्मला सैनी[1] , डॉ. दीपा माथुर[2]

[1] संस्कृत विभाग , डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय स्नात्तकोतर महाविद्यालय, श्रीगंगानगर, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर।

[2] निर्देशिका , अध्यक्ष संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय स्नात्तकोतर महाविद्यालय, श्रीगंगानगर.

सारांश

एक समय था जब यह दृश्य जगत अन्नत में लीन था ग्रह नक्षत्र तारे तथा पंचभौतिका पदार्थ शेष में विलीन थे उस समय उस अनिर्वचनीय ब्रह्मा के अतिरिक्त कुछ भी नही था। एक दीर्घकाल के बाद उस में एकोऽहं बहुष्याम् की स्वाभाविक भावना जागृत हो गयी फिर क्या था एक से दो होते ही इसका नाम स्वयम्भू ब्रह्मा पड़ गया, इसी आदिब्रह्मा से वेदों का आरम्भ है।

वेद उपनिषद् एवं पुराणों में एकमात्र ब्रह्मा को ही समस्त सृष्टी का कर्ता माना गया है। ब्रह्माा ने सर्वप्रथम ऊँकारात्मक वेद का ध्यान किया।

ब्रह्मा सृष्टिकर्ता के रूप में प्रसिद्ध हैं। सृष्टि के आरम्भ में अप्रमेय महेश्वर ही ब्रह्माा कहे गये हैं जिन्होंने प्रकृति और पुरुष में प्रवेश कर उत्कृष्ट योग द्वारा उनमें क्षोभ उत्पन्न किया, कालान्तर में इसी के द्वारा विभिन्न प्राणि जगत् की सृष्टि हुई। इसके अतिरिक्त स्वर्ण वर्ण के अण्ड से हिरण्यगर्भ ब्रह्मा की उत्पत्ति का कथानक वर्णित है।

ब्रह्मा की अर्चना भी अन्य देवताओं के सदृश अत्यन्त लोकप्रिय प्रतीत होती है। कुशद्वीप के निवासी ब्रह्मा की उपासना करने वाले हैं, वे अनेक प्रकार के यज्ञों से उनकी उपासना करते हैं जिससे उन्हें ब्रह्मा का सायुज्य, सारूप्य एवम् सालोक्य मोक्ष प्राप्त होता है।

सुमेरु पर्वत के ऊपर ब्रह्मा की चौदह सहस्र योजनों की महापुरी है जहाँ विश्व के कारण ब्रह्मा रहते हैं और श्रेष्ठ योगी, मुनि. विष्णु एवम् शंकर, सनत्कुमार, सिद्ध, ऋषि, गन्धर्व एवम् देवगण उनकी उपासना करते हैं। प्राजापत्य लोक के ऊपर छः करोड़ योजन का सत्यलोक है, इसे ब्रह्मालोक कहते हैं। योगामृत का पान कर योगियों सहित ब्रह्मा यहाँ निवास करते हैं।

ब्रह्मा के पवित्र स्थानों में प्रयाग, ब्रह्मातीर्थ, अमरकण्टक पर्वत, पैतामह तीर्थ, नैमिशतीर्थ इत्यादि प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

ब्रह्मा से सम्बन्धित वस्तुएं आजस्थाली, कमण्डलु, अक्षमाला, स्रुव, स्रुक, कूर्च, कृष्णाजिन, पुस्तक, कमलासन, हंस आदि है।

इस प्रकार कूर्म पुराण में ब्रह्मा के पंचमुख का वर्णन भी है।

प्रस्तावना :

एक समय था जब यह दृश्य जगत अन्नत में लीन था ग्रह नक्षत्र तारे तथा पंचभौतिका पदार्थ शेष में विलीन थे उस समय उस अनिर्वचनीय ब्रह्मा के अतिरिक्त कुछ भी नही था। एक दीर्घकाल के बाद उस में एकोऽहं बहुष्याम् की स्वाभाविक भावना जागृत हो गयी फिर क्या था एक से दो होते ही इसका नाम स्वयम्भू ब्रह्मा पड़ गया, इसी आदिब्रह्मा से वेदों का आरम्भ है।

वेद उपनिषद् एवं पुराणों में एकमात्र ब्रह्मा को ही समस्त सृष्टी का कर्ता माना गया है। जैसे–

भुतानां ब्रह्मामा प्रथमोम जज्ञे। (अथर्ववेद 16/22,31)
ब्रह्मामा देवानां प्रथम सम्बभूव।
विश्वश्य कर्ता भुवनश्य गोप्ता।। (मुण्डक)
यो ब्रह्माणं विद्धाति पूर्वम यो वै
वेदांश्व नित्यं प्रहिणोति तस्मै।। (शतपत ब्रह्माणं)
तस्मै जज्ञे। स्वयं ब्रह्मा सर्वलोक पितामहः।। (मनुः 1/6)
अथ योगवता श्रेष्ट्मसृजद भूरितेजसम।
स्रष्टारं सर्वलोकानां ब्रह्माणं सर्वतोमुखम।। (मत्स्युपुराण166/1)

ब्रह्मा ने सर्वप्रथम ऊँकारात्मक वेद का ध्यान किया। अतः शास्त्रों में ऊँकार को ज्ञान का भंडार वेदों का बीज और ब्रह्मा का स्वरूप माना गया है।

सारा वैदिक साहित्य इसी ऊँ का व्याख्यान है। भूत भविष्य वर्तमान एवं समस्त प्रपञ्च इसी में अंतर्हित है। जिस प्रकार एक विशाल वृक्ष के बड़े बड़े स्कन्द अनेक शाखाऐं और अनगिनत पत्ते एक सूक्ष्म बीज में छिपे रहते है लाखो चेष्टा करने पर भी चर्मचक्षु द्वारा उनका दर्शन नही हो पाता; किंतु पृथ्वी जल उष्मा वायु और आकाश का सुयोग मिल जाने पर वे अंकुरित होकर विकसित हो जाते है।

ठीक उसी प्रकार वाचनिक ऊहापोह द्वारा उस ऊँकार की वास्तविकता जानना कठिन है किंतु ईश्वरीय नियंत्रण से वेद के रूप में प्रस्फुटित हो जाने पर समाधिस्थ योगियों को उनका साक्षात्कार होने लगता है ब्रह्मा ने सर्वप्रथम ऊँकार को ही प्राप्त किया था इसलिये उनको वेद का आविष्कारक कहा गया है।

इस प्रकार ब्रह्मा से प्रारम्भ होकर महर्षि व्यास तक वेद, गुरु शिष्य परम्परा द्वारा उपदिष्ट होते रहे। वेदव्यास जी ने एक ही वेद के स्तुतिप्रधान पद्यात्मक् मंत्रों का संग्रह करके ऋग्वेद यजनप्रधान गद्यात्मक् मंत्रों को एकत्र करके यजुर्वेद गीति प्रधान मंत्रों को इकठ्ठा करके सामवेद और आभिचारिक मंत्र समूह का संग्रह कर अथर्ववेद के नाम से क्रमशः होता, अध्वर्यु, उद्गाता तथा ब्रह्मा नामक चार ऋृत्विजो के उपयोग के लिए चार विभाग कर दिये वेदो के विभाग करने के कारण ही महर्षि कृष्ण द्वैपायन का नाम वेद व्यास पड़ गया। इसी प्रकार उक्त वेद के विशिष्ट समुदाय को इतिहास और पुराणों के नाम से भी स्मरण किया जाता है जिन वेद मंत्रों में कल्पित व्यक्तियों के संवाद या आख्यान रुप से कुछ रहस्य व्यक्त किया गया है उन्हें इतिहास, और जिन मंत्रों में सृष्टि प्रक्रिया का निर्देश हैं, उन्हें पुराण कहते है।

कूर्म पुराणमें ब्रह्मा के विविध नामों के उल्लेख मिलते है। यथा – अच्युत, अज, कनकाण्डज, कमलासर, कमलोद्भव, कुशध्वज, चतुरानन, चतुर्मुख, चतुर्वकत्र, धाता, नारायण, पद्मज, पद्मयोनि, पद्मसम्भव, परमेष्ठी, पितामह, प्रजापति, प्रपितामह, लोकपितामह, विधाता, विरञ्चि, वेधा, स्वयंभू तथा हिरण्यगर्भ। ब्रह्मा और विष्णु के परस्पर सम्वाद में विविध नामों की चर्चा की गयी है। वायु और ब्रह्माण्ड पुराण में भी इसी प्रकार के विवरण प्राप्त होते हैं।

त्रिदेव के अन्तर्गत ब्रह्मा, विष्ण एवम् शिव की गणना की गयी है, इसके अतिरिक्त इन्हीं देवताओं के आधार पर वैष्णव, ब्रह्मा एवम् हराश्रम नामक तीन आश्रमों की चर्चा प्राप्त होती है। किन्तु ब्रह्मलोक में योगियों सहित निवास करने वाले ब्रह्मा के ही साथ विष्णु और शंकर का भी वर्णन किया गया है। ब्रह्मा सृष्टिकर्ता के रूप में प्रसिद्ध हैं। सृष्टि के आरम्भ में अप्रमेय महेश्वर ही ब्रह्मा कहे गये हैं जिन्होंने प्रकृति और पुरुष में प्रवेश कर उत्कृष्ट योग द्वारा उनमें क्षोभ उत्पन्न किया, कालान्तर में इसी के द्वारा विभिन्न प्राणि जगत् की सृष्टि हुई। इसके अतिरिक्त स्वर्ण वर्ण अण्ड से हिरण्यगर्भ ब्रह्मा की उत्पत्ति का कथानक वर्णित है। वह आदि देव (आदि में होन से), अज (जन्म न होने से), प्रजापति (प्रजा का पालन करने से), हरि (सभी का हरण करने से), स्वयम्भू (किसी द्वारा उत्पन्न न होने और पूर्ववर्ती होने से), हर (संसार का संहार होने से), ओम् (रक्षा कार्य करने से), सर्वज्ञ (सभी पदार्थों का विज्ञान होने के कारण), सर्व (सभी पदार्थों में व्याप्त होने से), शिव एवम् विभु (निर्मल तथा सर्वव्यापक होने से) तथा तारक (दुःखों से मुक्त करने वाला होने से) हैं। अतः सम्पूर्ण जगत् ही ब्रह्ममय है।

ब्रह्मा की अर्चना भी अन्य देवताओं के सदृश अत्यन्त लोकप्रिय प्रतीत होती है। कुशद्वीप के निवासी ब्रह्मा की उपासना करने वाले हैं, वे अनेक प्रकार के यज्ञों से उनकी उपासना करते हैं जिससे उन्हें ब्रह्मा का सायुज्य, सारूप्य एवम् सालोक्य मोक्ष प्राप्त होता है। विश्वज्योति नामक राजा ने ब्रह्माा की आराधना कर क्षेमक नामक धर्मज्ञ एवम् शत्रुमर्दन राजा को पुत्र रूप से उत्पन्न किया। हिरण्यकशिपु ने ब्रह्मा को तपश्चर्या द्वारा प्रसन्न कर दिव्य वर प्राप्त कर देवों को प्रताड़ित करने लगा। कालान्तर में देवों द्वारा विष्णु की स्तुति किये जाने पर उन्होंने नृसिंह रूप धारण कर उसका वध किया। जमदग्नि ऋषि ने वसुमना नामक राजा को यज्ञों द्वारा ब्रह्मा की आराधना करने के लिए परामर्श दिया क्योंकि ईश्वर ने अजन्मा ब्रह्मा की नाभि में अद्वितीय जगत् के कारण स्वरूप बीज की स्थापना की। हिमालय के शिखर पर स्थित रमणीक देवदारु वन में रहते हुए कन्दमूल एवम् फल का आहार कर मुनियों के अन्न से देवों के निमित्त यज्ञ कर उन्हें प्रसन्न कर इच्छित वर प्राप्त किया तथा रुद्र का जप कर महेश्वर को प्राप्त हुआ। संन्यासी को भी ब्रह्मा का ध्यान करने के लिए कहा गया है। ब्रह्मा में समस्त कार्यों का आधान कर आसक्ति रहित निष्काम व्यक्ति प्रसन्न मन से कर्म करते हुए मोक्ष पद प्राप्त करता है। ब्रह्मा देने योग्य वस्तु प्रदान करता है, ब्रह्मा को ही दिया जाता है यही श्रेष्ठ ब्रह्मार्पण की भावना है। ''मैं करने वाला नहीं हूँ तथा वह यह सब कर रहा है।'' तत्त्वदर्शी ऋषियों ने इस भाव को ब्रह्मार्पण कहा है, इस कर्म से शाश्वत भगवान् ईश प्रसन्न हों। बुद्धि से निरन्तर इस प्रकार की भावना करना श्रेष्ठ ब्रह्मार्पण होता है अथवा परमेश्वर में सभी कर्मों के फलों का संन्यास करें—यह भी श्रेष्ठ ब्रह्मार्पण है। निष्काम कर्म से मनुष्य का इस जन्म एवम् पूर्व जन्म का पाप क्षीण हो जाता है। तदनन्तर मन की प्रसन्नता प्राप्त कर मनुष्य ब्रह्माज्ञानी हो जाता है। सुमेरु पर्वत के ऊपर ब्रह्मा की चौदह सहस्र योजनों की महापुरी है जहाँ विश्व के कारण ब्रह्मा रहते हैं और श्रेष्ठ योगी, मुनि. विष्णु एवम् शंकर, सनत्कुमार, सिद्ध, ऋषि, गन्धर्व एवम् देवगण उनकी उपासना करते हैं। प्राजापत्य लोक के ऊपर छः करोड़ योजन का सत्यलोक है, इसे ब्रह्मालोक कहते हैं। योगामृत का पान कर योगियों सहित ब्रह्मा यहाँ निवास करते हैं। यहाँ शान्त स्वभाव वाले यतिगण, नैष्ठिक ब्रह्माचारी, योगी तपस्वी, सिद्ध एवम् परमेष्ठी का जप करने वाले प्रवेश करते हैं। पुष्कर द्वीप में भी ब्रह्मा का निवास बताया गया है। प्लक्ष द्वीप में ब्रह्मा का अत्यन्त प्रिय वैभ्राज नामक पर्वत है। यहाँ देवर्षि, गन्धर्व एवम् सिद्धगण भगवान् अज की उपासना करते हैं। ब्रह्मा के पवित्र स्थानों में प्रयाग, ब्रह्मातीर्थ, अमरकण्टक पर्वत, पैतामह तीर्थ, नैमिशतीर्थ इत्यादि प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।

मैत्रायणी संहिता (शतरुद्रिय) में ब्रह्मा को चतुर्मुख तथा कमलासन एवम् तैत्तिरीय आरण्यक में हिरण्यगर्भ (ब्रह्मा) रूप में वेदों की आत्मा के रूप में निरूपित किया गया है।

ब्रह्मा वैदिक पुरोहित के रूप में प्रतिष्ठित थे। ब्रह्मा से सम्बन्धित वस्तुओं का विवेचन अधोलिखत रूप में किया जा सकता है।

आजस्थाली

वैदिक विधि—विधान में प्रयुक्त हवि हेतु घृत पात्र विशेष।

कमण्डलु

सवन या सब यज्ञादि कार्यों के लिए प्रयुक्त जल पात्र।

अक्षमाला

ब्रह्मा के हाथ में विद्यमान अक्षमाला काल सम्बन्धी अवधारण की प्रतीक प्रतीत होती है जो उनके यौगिक पक्ष को भी उजागर करती है। सूत्र में बँधी हुई 21 या 20 की संख्या में अक्षमाला मिलती है। नक्षत्र गणना की प्रतीक नक्षत्र माला का यह अक्षमाला स्मरण दिलाती है। अमर कोष में 27 गुरियों की नक्षत्र माला का उल्लेख है।

स्रुव

स्रुक

कूर्च

कूर्च का तात्पर्य दाड़ी से है। प्राचीनकाल में ब्रह्माचारी गण कूर्च धारण करते थे। ब्रह्मा की मूर्तियों में भी कूर्च का प्रावधान देखा जाता है। गृह्यसूत्रों में कुशासन का वर्णन मिलता है। कूर्च का अर्थ कुशग्रास से बने आसन से भी है।

कृष्णाजिन

ब्रह्मा की मूर्तियों में ऊपरी भाग में कृष्णाजिन (कृष्ण मृग चर्म) का अड़्कन मिलता है। गृह्यसूत्रों में ब्रह्माचारियों के लिए प्रयुक्त होता था।

पुस्तक

ब्रह्माचारियों के लिए आवश्यक वस्तु के रूप में प्रचलित थी। ब्रह्मा के हाथों में पुस्तक ब्रह्माचारियों के एक पक्ष का प्रतिनिधित्व करती है।

कमलासन

प्राचीनकाल में यज्ञ–भूमि का आकार कमल के समान हुआ करता था। कमल, ब्रह्माा की सृष्टि का प्रतीक है। कालान्तर में आर्यों के प्रभाव से सृष्टि का विचार विष्णु के साथ समाहित हो गया।

हंस

रामायण में सर्वप्रथम हंस का वर्णन मिलता है। ऐहोल स्थित चालुक्य मन्दिर में हंस को ब्रह्मा के वाहन के रूप में अड़्कित किया गया है।

सावित्री

वेदों के उद्भव की कारण स्वरूपा होने के कारण सावित्री कहलायी। सूर्य रश्मियों से उत्पन्न होने के कारण सावित्री कहा जाता है। ब्रह्मा की पत्नी के रूप में भी मान्यता प्राप्त है। सरस्वती और सावित्री ब्रह्मा की पत्नियों के रूप में धार्मिक विधि–विधानों को सम्पादित करने में विशेष भूमिका रखती है।

सार रूप में यही कहा जा सकता है कि ब्रह्मा सृष्टि कर्ता हैं किन्तु विष्णु में ब्रह्मा के समाहित हो जाने पर विष्णु, ब्रह्मा रूप में वे रक्षक और विनाशक भी हो जाते हैं। वैष्णव पुराणों की भाँति यहाँ भी उन्हें विष्णु के एक रूप में सदृश उल्लिखित किया गया है किन्तु जहाँ पर शैव प्रभाव (पाशुपत) दृष्टिगोचर होने लगता है वहाँ उन्हें सहस्रों आँखों, शिरों तथा पैरों वाला (ऋग्वैदिक विराट् पुरुष की भाँति) अभिव्यक्त किया गया है। नारायण का समीकरण विष्णु के साथ किया गया है जो सहस्र शिरों, आँखों तथा पैरों से युक्त विष्णु समुद्र में शयन कर रहे हैं। ब्रह्मा का उद्भव कमल से प्रतिपादित किया गया है। वेधस, वेदनिधि, धाता, विधाता, स्वयंभू, विश्वतोमुख कुशध्वज तथा कनकाण्डज आदि। ब्रह्मा के विविध नाम है। ब्रह्मा–विष्णु परस्पर सन्लाप के बाद एकाकार हो जाते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. **कूर्म पुराण – गीता प्रेस गोरखपुर।**
2. **कूर्म पुराण – शिवजीत सिंह।**
3. **पुराण तत्व भीमांसा –डॉ. श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी।**
4. **पुराण विमर्श – आचार्य बलदेव उपाध्याय।**

5. पुराण पर्यालोचनम् – श्री कृष्णमणि त्रिपाठी।
6. आर.सी. हाजरा –स्ट्टीज इन उपपुराणाज़ ।